भारत का भौतिक स्वरूप

अध्याय - 02

1. परिचय

1.1 वर्तमान अनुमान के अनुसार, पृथ्वी की आयु लगभग 46 करोड़ वर्ष है। इस लम्बे भूगर्भिक समय में पृथ्वी पर, अन्तर्जात व बहिर्जात बलों से अनेक परिवर्तन हुए हैं, जिसके फलस्वरूप समस्त भारतीय भूभाग में भी विभिन्न प्रकार के भू —आकृतिक लक्षणों का मिश्रण देखा जाता है।

1.2 यहां पर पर्वत, मैदान, मरुस्थल, पठार तथा द्वीप समूह आदि समस्त प्रकार की भू —आकृतियाँ पायी जाती है।

1.3 भारत में विभिन्न प्रकार के शैल पाये जाते है, जिनमे से कुछ सेलखड़ी की तरह मुलायम होती है,जिसका उपयोग टेलकम पाउडर बनाने में तो कुछ संगमरमर की तरह कठोर जिसका उपयोग ताजमहल के निर्माण में किया जाता है।

1.4 भारत में विभिन्न प्रकार की मृदा पायी जाती है, जिनका विभाजन आकार तथा रंग के आधार पर किया जाता है। मृदाओं का रंग, आकार, प्रकार उसकी जनक शैल पर ही निर्भर करता है, कि उसका निर्माण किस शैल से हुआ हैं।

2. भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का विभाजन

2.1 पर्वतीय भाग	10.7 %
2.2 पहाड़ियां	18.6 %
2.3 पठारी क्षेत्र	27.7 %
2.4 मैदानी भाग	43 %

3. भू – आकृतियों की संरचना

3.1 इनका निर्माण व संशोधन विभिन्न भूगर्भिक कालों के दौरान, अन्य भू-आकृतिक प्रक्रियाओं, जैसे - अपक्षय, अपरदन तथा निक्षेपण के द्वारा हुआ है। भूगर्भशास्त्रियों ने कुछ प्रमाणों पर आधारित सिद्धांतों की सहायता से इन भू-आकृतियों के निर्माण की व्याख्या करने की कोशिश की है, जिसमे सर्वमान्य सिद्धांत, प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत है।

4. प्लेट विवर्तनिकी का सिद्धांत

4.1 पृथ्वी के ठोस भूखंड को प्लेट कहा जाता है। इन प्लेटों की गति के कारण, इसके अंदर एवं बाहर की ओर स्थित महाद्वीपीय शैलों में दबाव उत्पन्न होता है, फलस्वरूप वलन, भ्रंशीकरण तथा

© JCERT not to be republished

ज्वालामुखी क्रिया होती है। सामान्यतः इन प्लेटो की गतियों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है :-

4.1.1 अभिसारी सीमा।

4.1.2 अपसारी सीमा।

4.1.3 रूपांतरण सीमा।

4.1.1 **अभिसारी सीमा,** वह है जिसमे कुछ प्लेट एक दूसरे के करीब आती है।

4.1.2 **अपसारित सीमा वह है** जिसमें प्लेटें एक दूसरे से दूर जाती है।

4.1.3 **रूपांतरित सीमा में प्लेटें** एक दूसरे के साथ क्षैतिज दिशा में गति कर सकती है। जिसके फलस्वरूप ही महाद्वीपों की स्थिति तथा आकार में परिवर्तन आया।

4.1.4 **प्लेट विवर्तनिक सिद्धांत के अनुसार पृथ्वी का स्थलमंडल सात बड़ी एवं कुछ छोटी प्लेटों से बना है।**

© JCERT
not to be republished

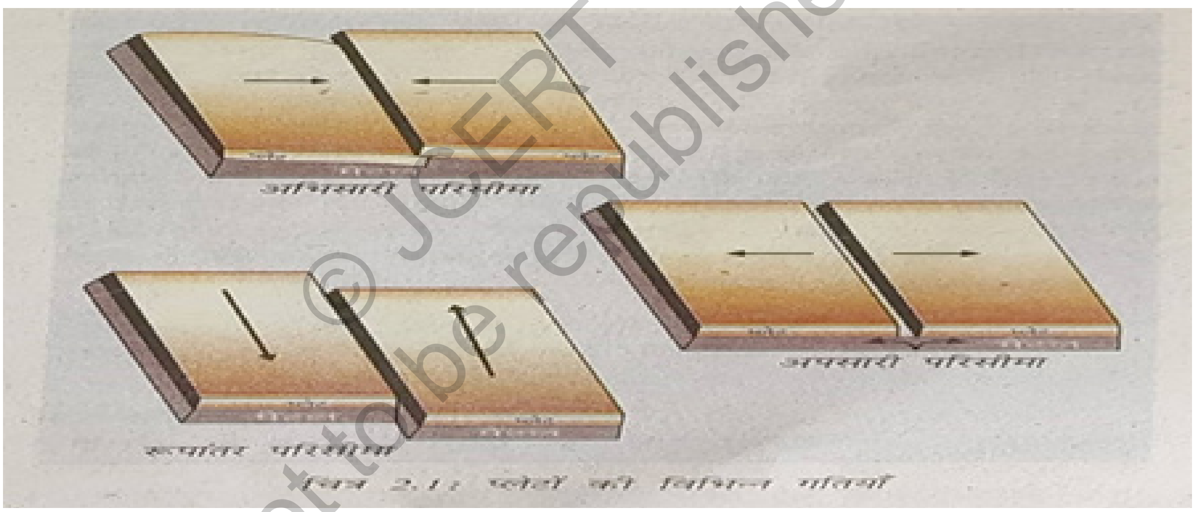

चित्र 2.1: प्लेटों की विभिन्न गतियाँ

4.1.5 प्रमुख विवर्तनिक प्लेटें :-

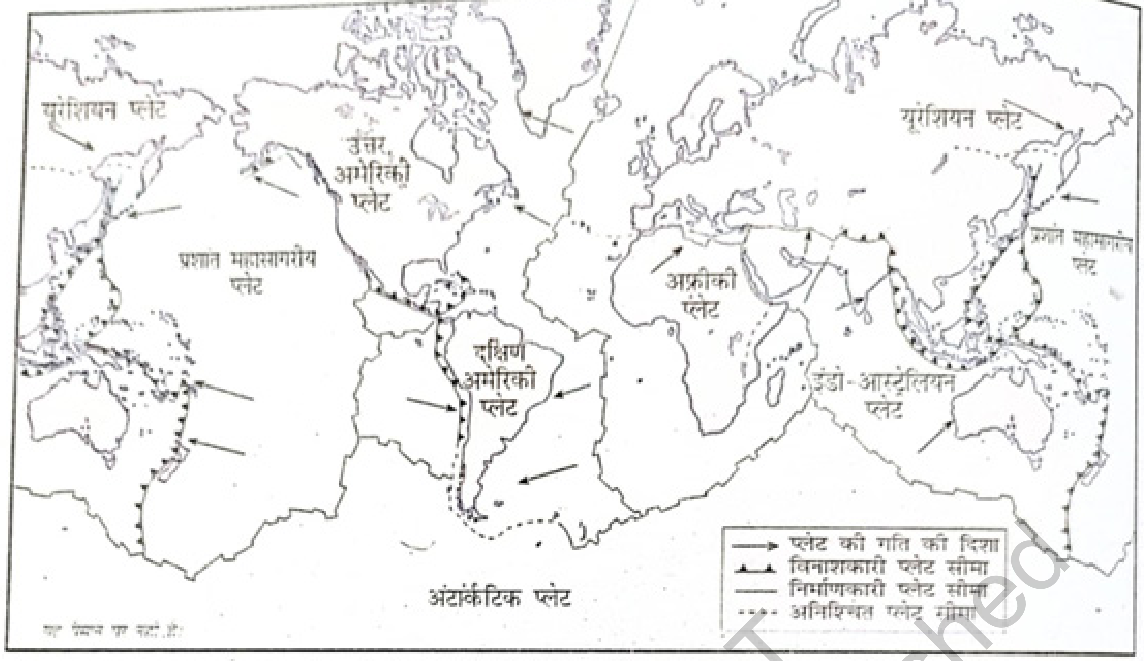

चित्र 2.2 : भू-पृष्ठ की मुख्य प्लेटें

- प्रशान्त महासागरीय प्लेट।
- उत्तर अमेरिकी प्लेट।
- दक्षिण अमेरिकी प्लेट।
- अफ्रीकी प्लेट।
- अंटार्कटिक प्लेट।
- यूरेशियन प्लेट।
- इंडो — आस्ट्रेलियन प्लेट।

4.1.6 सबसे प्राचीन भू-भाग (अर्थात प्रायद्वीपीय भाग) गोंडवाना भूमि का एक हिस्सा था। गोंडवाना भू - भाग के विशाल क्षेत्र में भारत, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका तथा अंटार्कटिका के क्षेत्र शामिल थे।

4.1.7 संवहनीय धाराओं ने भूपर्पटी को अनेक खंडों में विभक्त कर दिया है और इस प्रकार भारत ऑस्ट्रेलिया की प्लेट गोंडवाना भूमि से अलग होने के बाद उतर दिशा की ओर प्रवाहित होने लगी। उतर दिशा में प्रवाह के परिणामस्वरूप ये प्लेटें अपने से अधिक विशाल प्लेट यूरेशियन से टकराई अतः इनके बीच स्थित टेथिस भू अभिनति के अवसादी चट्टान वलित होकर हिमालय तथा पश्चिम एशिया की पर्वत श्रृंखला के रूप में विकसित हो गए।

4.1.8 टेथिस के हिमालय के रूप में ऊपर उठने तथा प्रायद्वीप के नीचे धंसने से एक बहुत बड़ी द्रोणी का निर्माण हुआ। समय के साथ इस बेसिन के विभिन्न भागों में बहने वाली नदियों के अवसादी निक्षेपों से विस्तृत समतल उतरी मैदान का निर्माण हुआ

© JCERT not to be republished

5. भारत की भौगोलिक आकृतियों का विभाजन

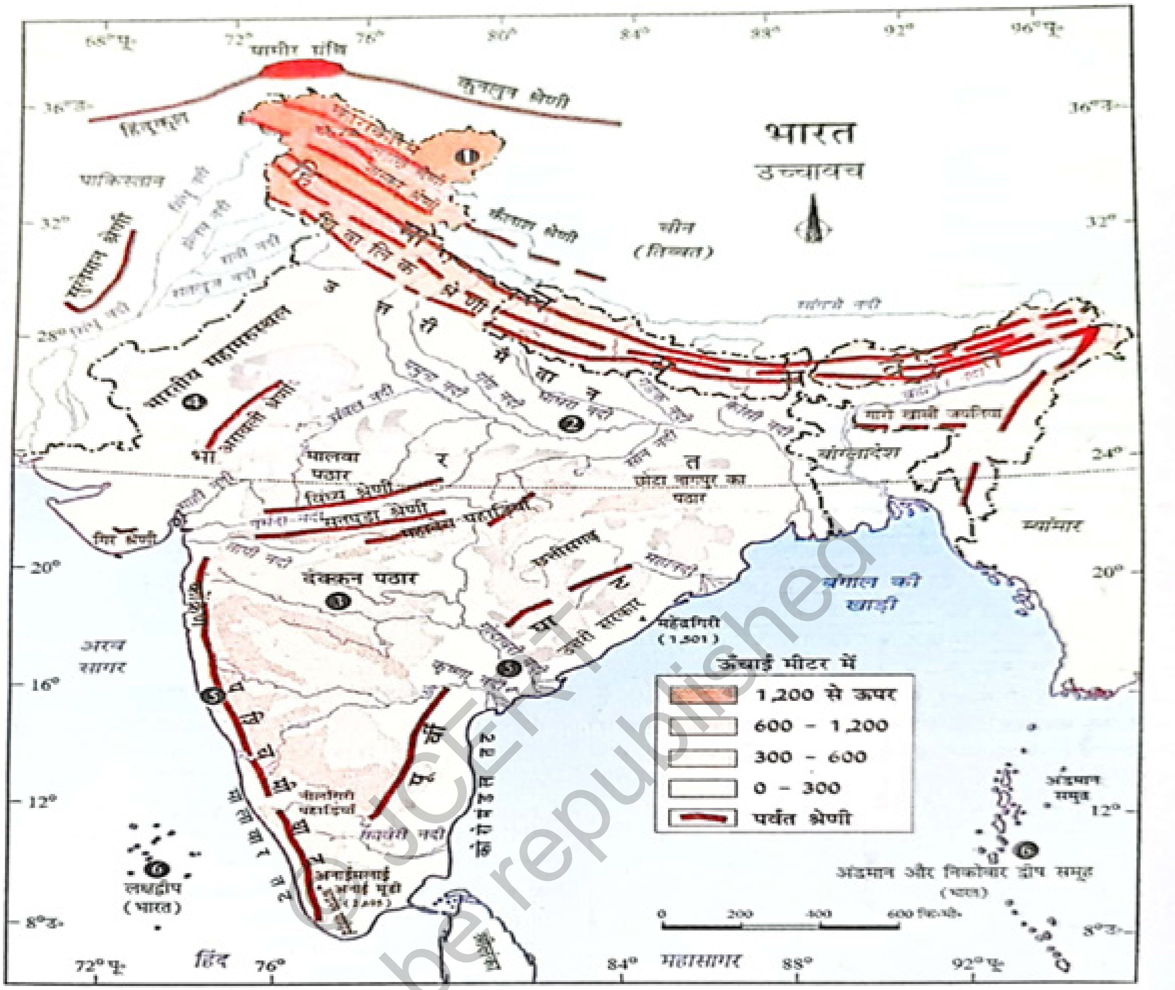

चित्र 2.2 : भारत— मुख्य भौगोलिक वितरण

© JCERT not to be republished

5.1 भारत की भौगोलिक आकृतियों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

- हिमालय पर्वत श्रृंखला
- उत्तरी मैदान
- प्रायद्वीपीय पठार
- भारतीय मरुस्थल
- तटीय मैदान
- द्वीप समूह

5.1.1 हिमालय पर्वत

5.1.1. a हिमालय को नवीन वलित पर्वत कहा जाता है । हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा का निर्धारण करता है

5.1.1 .b हिमालय पर्वत सिन्धु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला हुआ है ।

5.1.1 .c हिमालय की लम्बाई 2400 किलोमीटर है तथा चौड़ाई कश्मीर में 400 किलोमीटर तथा अरुणाचल प्रदेश में 150 किलोमीटर है । यह एक अर्द्धवृत्त का निर्माण करते हैं ।

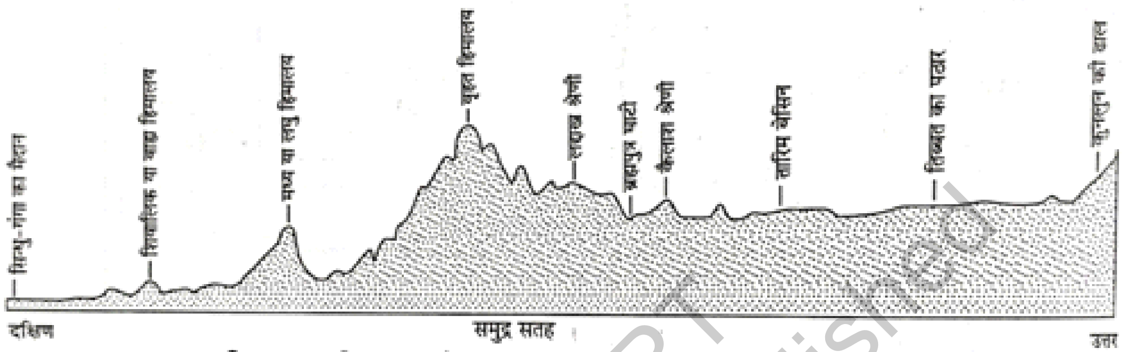

चित्र 2.2 : हिमालय पर्वत समूह : दक्षिण से उत्तर तक का पार्श्व चित्र

© JCERT not to be republished

5.1.2 हिमालय का विभाजन

5.1.2 उत्तर दक्षिण विभाजन में हिमालय को चार भागों में विभाजित किया गया है :-

5.1.2.a ट्रांस हिमालय या पार हिमालय

5.1.2.b हिमाद्रि (महान या आंतरिक हिमालय)

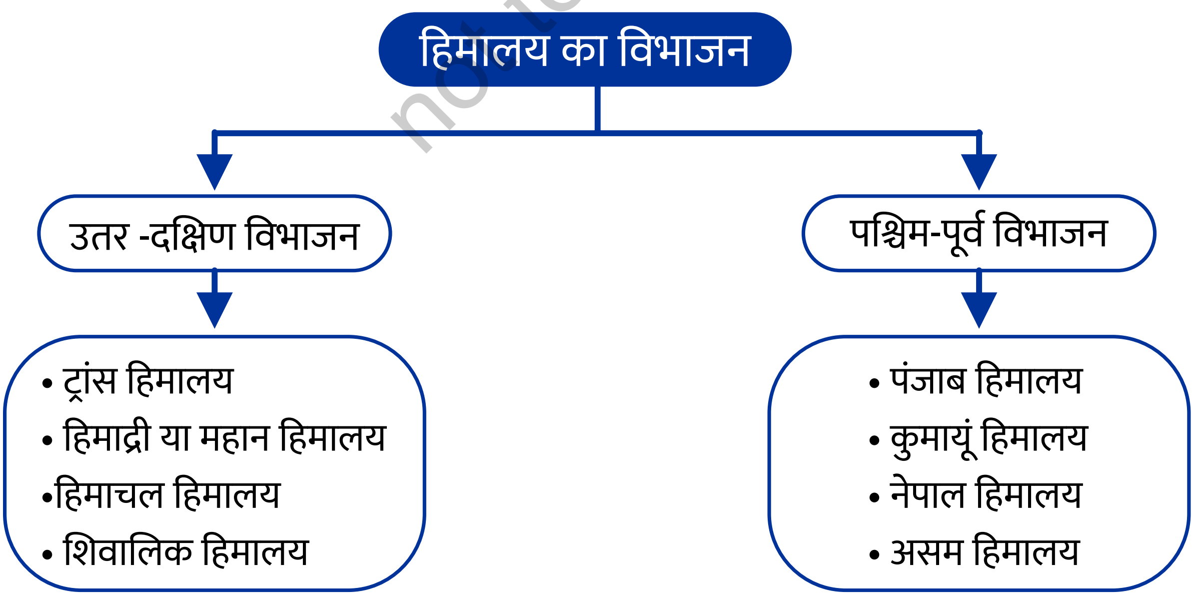

5.1.2.c हिमाचल (निम्न हिमालय या मध्य हिमालय)

5.1.2. d शिवालिक बाह्य हिमालय

5.1.3 पश्चिम से पूर्व का विभाजन 4 भागों में किया गया है

5.1.3. a पंजाब हिमालय

5.1.3. b कुमाऊं हिमालय

5.1.3. c नेपाल हिमालय

5.1.3. .d असम हिमालय

5.1.2.a ट्रांस हिमालय या पार हिमालय

- यह हिमालय वृहत हिमालय के पीछे उत्तर -पश्चिम में स्थित है।
- इसे तिब्बत या धौलाधार श्रेणी भी कहा जाता है इसकी कुल लम्बाई लगभग 965 किमी तथा पूर्व और पश्चिम में चौड़ाई 40 किमी तथा मध्यवर्ती भाग में चौड़ाई 25 किमी है।
- यहाँ की नदी बेसिन की ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 3500 मीटर है।

© JCERT not to be republished

वृहत हिमालय की प्रमुख चोटियाँ

चोटी	ऊँचाई (मीटर में)
माउण्ट एवरेस्ट (नेपाल)	8,848
कंचनजंगा (भारत)	8,598
मकालु (नेपाल)	8,463
धौलागिरि (नेपाल)	8,167
नंगा पर्वत (भारत)	8,126
अन्नपूर्णा (नेपाल)	8,091
नन्दा देवी (भारत)	7,817
कामेत (नेपाल)	7,756
नामचा बर्वा (चीन-भारत)	7,756
गुरला मनधाता (नेपाल)	7,728
त्रिशूल (भारत)	7,120
बद्रीनाथ (भारत)	7,138

- अधिकांश बड़ी नदियों के उद्गम तथा बेसिन इसी श्रेणी में है जो वृहत हिमालय को पार कर भारत के भाग में बहती है।
- इनमे अवसादी शैलों की अधिकता पायी जाती है।

5.1.2. b हिमाद्रि (महान या आंतरिक हिमालय)

- सबसे उत्तरी भाग में स्थित श्रृंखला को महान या आंतरिक हिमालय या हिमाद्री कहते हैं।
- यह सबसे अधिक सतत श्रृंखला है, जिसमें 6,000 मीटर की औसत ऊँचाई वाले सर्वाधिक ऊँचे शिखर हैं।
- इसमें हिमालय के सभी मुख्य शिखर हैं।
- महान हिमालय के वलय की प्रकृति असममित है।
- हिमालय के इस भाग का क्रोड ग्रेनाइट से बना है।
- यह श्रृंखला हमेशा बर्फ से ढकी रहती है तथा इससे बहुत सी हिमानियों का प्रवाह होता है।

5.1.2. c हिमाचल (निम्न हिमालय या मध्य हिमालय)

- हिमाद्रि के दक्षिण में स्थित श्रृंखला सबसे अधिक असम है एवं हिमाचल या निम्न हिमालय के नाम से जानी जाती है।
- इन श्रृंखलाओं का निर्माण मुख्यतः अत्यधिक संपीड़ित तथा परिवर्तित शैलों से हुए हैं।
- इनकी ऊंचाई 3,700 मीटर से 4,500 मीटर के बीच तथा औसत चौड़ाई 50 किलोमीटर है।
- जबकि पीर पंजाल श्रृंखला सबसे लंबी तथा सबसे महत्वपूर्ण श्रृंखला है, धौलाधर एवं महाभारत श्रृंखलाऐं भी महत्वपूर्ण हैं।
- इसी श्रृंखला में कश्मीर की घाटी तथा हिमाचल के कांगड़ा एवं कुल्लू की घाटियाँ स्थित हैं।
- इस क्षेत्र को पहाड़ी नगरों के लिए जाना जाता है।
- भारत के प्रसिद्ध स्वास्थ्यवर्धक स्थान शिमला, मसूरी, नैनीताल दार्जिलिंग इसके निचले भाग में ही स्थित है।
- इसके संरचना में अवसादी शैलों की प्रधानता होती है। जबकि कहीं - कहीं ये शैलें कायांतरित होकर स्लेट, क्वार्ट्ज और संगमरमर में बदल जाती है।

5.1.2. d शिवालिक

- हिमालय की सबसे बाहरी श्रृंखला को शिवालिक कहा जाता है।
- इनकी चौड़ाई 10 से 50 कि० मी ० तथा ऊँचाई 900 से 1,100 मीटर के बीच है।
- ये श्रृंखला, उत्तर में स्थित मुख्य हिमालय की श्रृंखलाओं से नदियों द्वारा लायी गयी असंपिडित अवसादों से बनी है।
- ये घाटियाँ बजरी तथा जलोढ़ की मोटी परत से ढँकी हुई हैं।

© JCERT not to be republished

- निम्न हिमालय तथा शिवालिक के बीच में स्थित लंबवत घाटी को दून के नाम से जाना जाता है।

- कुछ प्रसिद्ध दून हैं — देहरादून, कोटलीदून एवं पाटलीदून।

5.1.4 . हिमाचल में पाए जाने वाले प्रमुख दर्रे

- काराकोरम दर्रा
- रोहतांग दर्रा
- बुर्जिल दर्रा
- जोजिला दर्रा
- पीरपंजाल दर्रा
- शिपकीला दर्रा।

5.1.5 पश्चिम से पूर्व का विभाजन

5.1.5 .a हिमालय को पश्चिम से पूर्व तक स्थित क्षेत्रों के आधार पर भी विभाजित किया गया है। यह वर्गीकरण नदी घाटियों की सीमाओं पर आधारित है।

- सतलुज एवं सिंधु के बीच स्थित हिमालय के भाग को पंजाब हिमालय के नाम से जाना जाता है।

- पश्चिम से पूर्व तक क्रमशः इसे कश्मीर तथा हिमाचल के नाम से भी जाना जाता है।

- सतलुज तथा काली नदियों के बीच स्थित हिमालय के भाग को कुमाऊँ हिमालय के नाम से भी जाना जाता है।

- काली तथा तीस्ता नदियाँ, नेपाल हिमालय का एवं तीस्ता तथा दिहांग नदियाँ असम हिमालय का सीमांकन करती है।

6. उत्तरी मैदान

6.1.1 उत्तर का मैदान तीन प्रमुख नदी तंत्र सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियों से बना है हिमालय के गिरिपाद में लाखों वर्षों तक नदियों द्वारा लाये गए अवसाद के जमाव से इस मैदान का निर्माण हुआ है।

6.1.2 इसका विस्तार 7 लाख वर्ग कि० मी० के क्षेत्र पर है।

6.1.3 इस मैदान की लम्बाई 2400 कि० मी० तथा चौड़ाई 240 कि० मी० से 320 कि० मी० है।

6.1.4 यह मैदान भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला भाग है।

6.1.5 कृषि के लिए अनुकूल दशाओं के कारण यहाँ सर्वाधिक कृषि फसलें उगाई जाती है। अतः इसे भारत का अन्न भण्डार गृह कहा जाता है।

6.1.1. a उत्तरी मैदानो का विभाजन

- उत्तर के मैदान को तीन भागों में विभाजित किया गया है :-

6.1.2 .b गंगा का मैदान :-

- गंगा के मैदान का विस्तार घघ्घर तथा तीस्ता नदियों के बीच है। यह उत्तरी भारत के राज्यों हरियाणा, दिल्ली, उत्तर

© JCERT not to be republished

प्रदेश, बिहार, झारखंड के कुछ भाग तथा पश्चिम बंगाल में फैला है।

6.1.3 . c पंजाब का मैदान :-

- उत्तरी मैदान के पश्चिमी भाग को पंजाब का मैदान कहा जाता है। सिंधु तथा इसकी सहायक नदियों झेलम, चिनाब, रावी, व्यास तथा सतलुज के द्वारा बनाये गए इस मैदान का बहुत बड़ा भाग पाकिस्तान में स्थित है।

6.1.4 .d ब्रह्मपुत्र का मैदान :-

- ब्रह्मपुत्र का मैदान इसके पश्चिम में विशेषकर असम में स्थित है।

7. आकृतिक भिन्नता के आधार पर उत्तरी मैदानों का विभाजन

- आकृति भिन्नता के आधार पर उत्तरी मैदानों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है।

7.1 भाबर :-

- नदियों पर्वतों से नीचे उतरते समय शिवालिक की ढाल पर 8 से 16 कि० मी० के चौड़ी पट्टी में गुटिका का निक्षेपण करती हैं। इसे 'भाबर' के नाम से जाना जाता है। सभी सरिताऐं इस भाबर पट्टी में विलुप्त हो जाती हैं।

7.2 तराई :-

- इस पट्टी के दक्षिण में ये सरिताऐं एवं नदियाँ पुनः निकल आती हैं। एवं नम तथा दलदली क्षेत्र का निर्माण करती हैं, जिसे ' तराई ' कहा जाता है। यह वन्य प्राणियों से भरा जंगली क्षेत्र है।
- पाकिस्तान से आये शरणार्थियों को कृषि योग्य भूमि उपलब्ध कराने के लिए यहाँ स्थित वन को काटा जा चुका है।

7.3 भांगर :-

- उत्तरी मैदान का सबसे विशालतम भाग पुरानी जलोढ़ का बना है। वे नदियों के बाढ़ वाले मैदान के ऊपर स्थित हैं तथा वेदिका जैसी आकृति प्रदर्शित करते हैं। इस भाग को ' भांगर ' के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र की मृदा में चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में ' कंकड़ ' कहा जाता है। इसे ही भांगर कहा जाता है।

7.4 खादर :-

- बाढ़ वाले मैदानों के नये तथा युवा निक्षेपों को ' खादर ' कहा जाता है। इनका लगभग प्रत्येक वर्ष पुननिर्माण होता है, इसलिए ये उपजाऊ होते हैं तथा गहन खेती के लिए आदर्श होते हैं।

7.5 दोआब :-

- दोआब का अर्थ है दो नदियों के बीच की भूमि। ' दोआब ' दो शब्दों से मिलकर बना है — दो तथा आब अर्थात् पानी।

© JCERT not to be republished

8 . प्रायद्वीपीय पठार

8.1 प्रायद्वीपीय पठार एक मेज की आकृति वाला स्थल है जो पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय तथा रूपांतरित शैलों से बना है ।

8.1.1. यह गोंडवाना भूमि के टूटने एवं अपवाह के कारण बना था ।अतः इसे प्राचीनतम भू भाग का एक हिस्सा माना जाता है। इस पठार के दो मुख्य भाग हैं :-

- 'मध्य उच्च भूमि'
- 'दक्कन का पठार'

8.1.2 मध्य उच्चभूमि :- नर्मदा नदी के उत्तर में प्रायद्वीपीय पठार का वह भाग जो कि मालवा के पठार के अधिकांश भागों में विस्तृत है, जिसे ही मध्य उच्च भूमि के नाम से जाना जाता है । विंध्य श्रृंखला दक्षिण में सतपुड़ा श्रृंखला तथा उत्तर — पश्चिम में अरावली से घिरी है । पश्चिम में यह धीरे धीरे राजस्थान के बलुई तथा पथरीले मरुस्थल से मिल जाता है । इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ चंबल, सिंध, बेतवा तथा केन दक्षिण -पश्चिम से उतर पूर्व की ओर बहती है इस प्रकार वे इस क्षेत्र के ढाल को दर्शाती है।

8.1 .3 . दक्षिण का पठार: दक्षिण का पठार एक त्रिभुजाकार भूभाग है, जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है । उत्तर में इसके चौड़े आधार पर सतपुड़ा की श्रृंखला है, जबकि महादेव, कैमूर की पहाड़ी तथा मैकाल श्रृंखला इसके पूर्वी विस्तार हैं । दक्षिण का **पठार** पश्चिम में ऊँचा एवं पूर्व की ओर कम ढाल वाला है । इस पठार का एक भाग उत्तर — पूर्व में भी देखा जाता है, जिसे स्थानीय रूप से ' मेघालय ', ' कार्बी आंगलोंग पठार ' तथा ' उत्तर कचार पहाड़ी ' के नाम से जाना जाता है । यह एक भ्रंश द्वारा छोटा नागपुर पठार से अलग हो गया है । गारो खासी और जयंतिया पश्चिम से पूर्व स्थित तीन महत्वपूर्ण इसके ही तीन महत्वपूर्ण श्रेणियां हैं।

8.1.3. a दक्षिण पठार के पूर्वी एवं पश्चिमी सीमा पर क्रमशः पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट स्थित है, पश्चिमी तट के समानांतर एवं सतत है जो केवल दर्रो से ही पार किया जा सकता है। पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट की तुलना में अधिक ऊँचे हैं जिसकी ऊंचाई 900 से 1100 मीटर किन्तु पूर्वी घाट की ऊंचाई 600 मीटर है।

8.1.3.b . पूर्वी घाट का विस्तार असतत एवं अनियमित बंगाल की खाड़ियों में गिरने वाली नदियों के परिणामस्वरूप है।

8.1.3.c पश्चिमी घाट में पर्वतीय वर्षा होती है। जिसे विभिन्न स्थानीय नाम से जाना जाता है। इसकी सबसे ऊँची चोटी अनैमुड़ी (2695 मी.) तथा डोडा बेटा (2633 मी.)

8.1.3.d पूर्वी घाट की सबसे ऊँची चोटी महेंद्रगिरी (1500 मी०) है । इसके दक्षिण पश्चिम में शेवराय तथा जावेडी की पहाड़ियां स्थित है । उदगमंडलम, जिसे ऊटी के नाम से जाना जाता है पूर्वी घाट का ही हिस्सा है।

© JCERT not to be republished

8.1.3.e दक्कन ट्रैप :-

- प्रायद्वीपीय पठार का वह क्षेत्र जहाँ काली मृदा पाई जाती है वह दक्कन ट्रैप कहलाता है। इसकी उत्पत्ति ज्वालामुखी से हुई है इसलिए यहाँ आग्नेय शैल मिलते हैं।

9. भारतीय मरुस्थल

9.1 अरावली पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर थार का मरुस्थल स्थित है। यह बालू के टिब्बों से ढँका एक तरंगित मैदान है। इस क्षेत्र में प्रति वर्ष 150 मि० मी० से भी कम वर्षा होती है। इस शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र में वनस्पति बहुत कम है।

9.2 यहाँ एकमात्र नदी लूनी प्रवाहित होती है।जो कच्छ के रण क्षेत्र में गिरती है।

9.3 भारत -पाकिस्तान सीमा के निकट प्रमुख रूप से बनने वाली स्थलाकृति में बरखान, (अर्धचंद्राकार बालू का टीला आदि बनते हैं।

10. डेल्टा

- नदी के सागर में मिलने से पहले उसके प्रवाह में हल्का सा अवरोध आने पर मलबे का निक्षेपण होने लगता है। इससे अवसाद जमा होकर एक त्रिभुजाकार रूप ले लेता है। जिस डेल्टा कहते है।

11. तटीय मैदान

- प्रायद्वीपीय पठार के किनारे संकीर्ण तटीय पट्टियों का विस्तार है। यह पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत है। पश्चिम में पश्चिमी तट तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी के साथ लगा हुआ तट, पूर्वी तट कहलाता है।

11.1 **पश्चिम तट :-** इसके तीन भाग हैं। तट के उत्तरी भाग को कोंकण (मुंबई तथा गोवा), मध्य भाग को कन्नड मैदान एवं दक्षिणी भाग को मालाबार तट कहा जाता है।

11.2 पूर्वी तट

11.2.1 बंगाल की खाड़ी के साथ विस्तृत मैदान को पूर्वी तट कहा जाता है। जो काफी चौड़ा एवं समतल है। इसके उतर के भाग को उतरी सरकार तथा दक्षिण के भाग को कोरोमंडल तट कहा जाता है।

11.2.2 यहाँ की बड़ी नदियाँ, जैसे -महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी है, जो इस क्षेत्र की विशाल डेल्टा बनाती है ।

12. द्वीप समूह

भारत के दो प्रमुख द्वीप समूह हैं :

12.1 . अरब सागर के द्वीप :-

- द्वीपों का यह समूह छोटे प्रवाल द्वीपों से बना है।
- पहले उनको लक्कादीव, मिनिकॉय तथा अमीनदीव के नाम से जाना जाता था।
- 1973 में उनका नाम लक्षद्वीप रखा गया।
- यह 32 वर्ग कि० मी ० के छोटे से क्षेत्र में फैला है।
- कावारत्ती द्वीप लक्षद्वीप का प्रशासनिक मुख्यालय है।

© JCERT not to be republished

- इस द्वीप समूह पर विभिन्न प्रकार के पादप तथा जंतु पाए जाते हैं।
- पिटली द्वीप यहां का एक द्वीप है, जहाँ मानव विकास नहीं है, वहाँ एक पक्षी अभयारण्य है।

12.2. बंगाल की खाड़ी के द्वीप :-

- यहाँ अंडमान एवं निकोबार द्वीप हैं।
- यह द्वीप समूह आकार में बड़े और संख्या में बहुल तथा बिखरे हुए हैं।
- यह द्वीप समूह मुख्यतः दो भागों में विभाजित है — उत्तर में अंडमान तथा दक्षिण में निकोबार।
- यह माना जाता है कि यह द्वीप समूह निमज्जित पर्वत श्रेणियों के शिखर हैं।
- यह द्वीप समूह देश की सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- इन द्वीप समूहों में पाए जाने वाले पादप एवं जंतुओं में बहुत अधिक विविधता है।
- ये द्वीप विषुवत वृत्त के समीप स्थित हैं एवं यहाँ की जलवायु विषुवतीय है तथा यह घने जंगलों से आच्छादित है।

पाठ – अभ्यास सह उत्तर

1. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

a) एक स्थलीय भाग जो तीन ओर से समुद्र से घिरा हो -

क. तट ख. प्रायद्वीप

ग. द्वीप घ. इनमे से कोई नहीं

उतर - ख. प्रायद्वीप

b. भारत के पूर्वी भाग में म्यांमार की सीमा का निर्धारण करने वाले पर्वतों का संयुक्त नाम -

क. हिमाचल ख. पूर्वांचल

ग. उत्तराखंड घ. इनमे से कोई नहीं

उतर - ख. पूर्वांचल

c. गोवा के दक्षिण में स्थित पश्चिम तटीय पट्टी -

क. कोरोमंडल ख. कन्नड़

ग. कोंकण घ. उतरी सरकार

उतर - कन्नड़।

© JCERT not to be republished

d. पूर्वी घाट का सर्वोच्च शिखर -

क. अनाइमुडी ख. महेंद्रगिरी

ग. कंचनजंघा घ.खासी

उतर - महेंद्रगिरी ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए -

a . भाबर क्या है ?

उतर - भाबर निम्न हिमालय और शिवालिक की पहाड़ियों के दक्षिणी ओर 8-16 किलोमीटर पट्टी में बसा एक क्षेत्र है[जहाँ पर्वतों से नीचे आने वाली नदियाँ विलुप्त हो जाती है।

b. हिमालय के तीन प्रमुख विभागों के नाम उत्तर से दक्षिण के क्रम में बताइए।

उत्तर - हिमालय के तीन प्रमुख विभागों उतर से दक्षिण के क्रम में इस प्रकार है -

1. हिमाद्री या महान हिमालय
2. लघु या हिमाचल हिमालय
3. शिवालिक या बाह्य हिमालय

3. अरावली और विन्ध्याचल की पहाड़ियों में कौन सा पठार स्थित है ?

उतर - अरावली और विन्ध्याचल की पहाड़ियों में मालवा का पठार स्थित है।

4. भारत के उन द्वीपों के नाम बताइए जो प्रवाल भित्ति के हैं ?

उतर - लक्षद्वीप, वे द्वीप हैं जो प्रवाल भित्ति से बने हैं।

5. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए -

a. बांगर और खादर

बांगर (Bhangar)	खादर (khadar)
1. बांगर प्रदेश बाढ़ के तल से ऊंचा है।	1. खादर प्रदेश में प्रतिवर्ष बाढ़ आती हैं।
2. पंजाब में इसे धाया कहते हैं।	2. पंजाब में इस मैदान को बेट कहते हैं
3. इसमें चूना युक्त संसाधनों की अधिकता है।	3. इसमें चीका मिट्टी की प्रधानता है।
4. यह पुरानी जलोढ़ मिट्टी का बना उच्च प्रदेश हैं	4. यह नवीन जलोढ़ मिट्टी का बना निम्न प्रदेश है।
5. यह कृषि के लिए उपयोगी नहीं है।	5. यहाँ गहन कृषि की जाती है।

© JCERT not to be republished

6. पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट।

उत्तर - पश्चिमी घाट (Western Ghat)- मुम्बई के उत्तर से लेकर धुर दक्षिण में कोमोरिन अंतरीप तक लगभग 1600 किमी. की लम्बाई में विस्तृत है। पश्चिमी घाट पश्चिमी तट के सहारे- सहारे विस्तृत मिलते हैं, जिन्हें महाराष्ट्र में सहयाद्रि, कर्नाटक व तमिलनाडु में नीलगिरी तथा केरल में अन्नामलाई व कार्डामम पहाड़ियाँ (Cardamom Hills) के नाम से जाना जाता है। पश्चिमी घाट पूर्वी घाट की तुलना में सतत रूप में विस्तृत मिलते हैं तथा उसकी ऊँचाई भी अधिक है। पश्चिमी घाट की औसत ऊँचाई 1500 मीटर है जो उत्तर से दक्षिण की और जाने पर क्रमशः अधिक होती जाती है। पश्चिमी घाट के दक्षिणी भाग में विस्तृत अन्नामलाई पहाड़ियों में पश्चिमी घाट का सर्वोच्च शिखर अनाईमुडी (2695 मीटर) अवस्थित है जबकि नीलगिरि पहाड़ियों में पश्चिमी घाट का दूसरा सर्वोच्च शिखर डोडाबेटा (2670 मीटर) अवस्थित है। प्रायद्वीपीय भारत के अधिकांश नदियों का उद्गम स्थल पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में ही हैं।

पूर्वी घाट (Eastern Ghats)- पूर्वी समुद्र तटीय मैदान के समान्तर महानदी की घाटी से दक्षिण में नीलगिरी पहाड़ी तक **दक्षिण**-पूर्व दिशा में 1,800 किमी. की लम्बाई में फैले हैं। ये घाट पश्चिमी घाट से बिल्कुल भिन्न है क्योंकि ये पश्चिमी घाट की भाँति न तो अधिक ऊँचे ही है और न शृंखलाबद्ध ही पूर्वी घाट की सतता अनेक स्थानों पर महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों द्वारा भंग कर दी गयी है। पूर्वी घाट की प्रमुख श्रेणियाँ जवादी पहाड़ियाँ, पालकोंडा श्रेणी, नल्लामाला पहाड़ियाँ तथा महेन्द्रगिरी पहाड़ियाँ हैं। ओडिशा के गंजाम जिले में स्थित महेन्द्रगिरि (1501 मीटर) पूर्वी घाट की सर्वोच्च चोटी है। पूर्वी तथा पश्चिमी घाट सुदूर दक्षिण में नीलगिरी पहाड़ियों पर मिल जाते हैं।

4. **भारत के प्रमुख भू**-आकृतिक विभाग कौन से हैं ? हिमालय क्षेत्र तथा प्रायद्वीप पठार के उच्चावच लक्षणों में क्या अंतर है ?

5. भारत के उत्तरी मैदान का वर्णन कीजिए।

© JCERT not to be republished